आकाश की छत

रामदरश मिश्र

लेखक परिचय

रामदरश मिश्र का जन्म 15 अगस्त 1924 में गोरखपुर जिले के डुमरी गाँव में हुआ। इन्होंने कविता कहानी उपन्यास आलोचना और निबंध जैसी प्रमुख विधाओं में तो लिखा है। इसके
साथ-साथ आत्मकथा, यात्रावृत तथा संस्मरण भी लिखे हैं। अनेक भारतीय भाषाओं में मिश्र जी हने कविताओं और कहानियों का अनुवाद भी किया है। इनकी अनेक कृतियाँ पुरस्कृत हुई हैं।
इनकी रचनाएँ - पहचान, खालीघर, सीमा, मुर्दा मैदान, खंडहर की आवाज़, पथ के गीत, पक गयी धूप, आँखे नम हैं, पानी के प्राचीर इत्यादि हैं।

आरंभ

आकाश की छत रामदरश मिश्र के द्वारा लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास का आरम्भ एक बाढ़ के दृश्य से होता है। उपन्यास का नायक यश आधी रात को अपने आप बाढ़ के पानी से घिरा हुआ पाता है। घरों की खिड़की दरवाजें सब पानी में डूब गये हैं। जिधर देखो उधर पानी ही पानी नजर आ रहा था। यश ने लोगों को डूबते देखा और माँ को मरे हुए बच्चे को पानी में फैंकते हुए देखा, तब उसे बहुत दुख हुआ। पास की छत पर बहुत सारे लोग हैं। वे कभी ताश खेलते हैं तो कभी बातें करके समय व्यतीत करते हैं। यश सोचने लगा कि मैंने अपने जीवन में बहुत सी मुसीबतों का सामना किया है। मैं इस मुसीबत का सामना भी करुँगा।मुझे चिन्ता करने की कोई जरुरत नहीं है। एक या दो दिन बाद यह बाढ़ का पानी उतर ही जाएगा। अनेक बातें सोचते-सोचते यश को नींद आ गयी। वह सो गया। लेकिन भूख में नींद कहाँ आती । जल्दी ही यश की आँख खुल गयी। तभी अचानक उसे गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी। उसे अपने अतीत की याद आने लगी।

मध्य

अतीत की सुख-दुख से भरी घटना यश को याद आने लगी। यश के पिताजी खाते-पीते इंसान थे। वे प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। उनकी पहली पत्नी का देहान्त हो गया था। पहली पत्नी के दो पुत्र थे। राम व बदरी। यश की माँ पिताजी की दूसरी पत्नी थी। यश पढ़ाई में बहुत तेज था परन्तु उसके दोनों भाइयों का मन पढ़ाई में कम और खेती-बाड़ी के काम में ज्यादा लगता था। जब यश दस वर्ष का था, तब उसकी माता का देहान्त हो गया। पिताजी ने उसे दुगने प्यार से संभाला। यश के दोंनो भाई अपनी-अपनी दुनिया में मस्त थे। अब पिताजी को यश की चिन्ता होने लगी कि मेरे मरने के बाद यश का क्या होगा। धीरे-धीरे यश के पिताजी का स्वास्थ्य गिरने लगा। राम भइया तीस साल के हो गये थे और बदरी भइया पच्चीस साल के। राम भइया की शादी बचपन में ही

हो गयी थी परन्तु गौना होने से पहले ही उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। आवारा होने की कारण उनकी दूसरी शादी नहीं हुई।

सर्दियों की एक रात बारह बजे मल्लाहों की बस्ती में राम भइया किसी औरत के साथ पकड़े गये। सभी लोगों ने मिलकर उनकी बहुत पिटाई की और पुलिस के हवाले कर दिया। यह सुनकर बदरी भैया को बहुत गुस्सा आया , उन्होंने कहा कि मैं मल्लाहों की बस्ती में आग लगा दूँगा। पिताजी बहुत नाराज हुए। पाँच बजे फिर शोर होने लगा मल्लाहों की बस्ती में आग लग गयी। सभी का सोचना यह था कि यह काम अवश्य ही बदरी ने किया होगा। पिताजी ने यश से कहा कि तुमसे कोई पूछे तो यही कहना कि बदरी भैया तुम्हारे साथ ही घर में सो रहे थे। सुबह थानेदार के आने पर यश ने ऐसा ही कहा।

पिताजी बहुत दुखी थे। पिताजी ने दोनों भाइयों को अपने पास बुलाया और कहा कि मुझे तुम लोगों से कोई शिकायत नहीं , मैंने ही तुम्हारी ठीक से परवरिश नहीं की। अब मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं, अब तुम्हीं लोगो को सब कुछ सँभालना है। बदरी भइया भी पिताजी की यह हालत देखकर बहुत दुखी थे।

शहर में एक सेठ था चोंकरदास वह गरीब लोगों के जेवर लेकर उन्हें कर्ज देता था और बाद में इतना सूद लगता था कि लोग अपना जेवर ही उसके पास छोड़ देते थे। लेकिन गरीबों की भलाई के लिए एक और ग्रुप बना जिसका नाम था- कामरेड। जो गरीब-अमीर सभी को बराबर समझता था। एक दिन यश देखता है कि सेठ के कुछ गुंडे एक लड़की को परेशान कर रहे थे तभी बदरी भइया आकर लड़की को बचाते हैं। उस लड़की का नाम रुपमती था।

एक दिन यश घर पर आया तो उसने देखा कि दरवाजे पर भीड़ लगी है, पिताजी की लाश अन्दर पड़ी थी। यश को लगा कि वह अब बिल्कुल अनाथ हो गया है। जीवन भर पिताजी जिस सेठ से बचते रहे राम भइया ने उसी सेठ के पास एक बीघा जमीन पिताजी के अंतिम संस्कार के लिए रख दी। बदरी भइया भी सेठ के यहाँ नौकरी करने लगे। कुछ समय बाद राम भइया शादी कर ली। यश को अच्छा लगा कि घर में रौनक हो जाएगी परन्तु भाभी भी यश को पसन्द नहीं करती थी। बात-बात पर गुस्सा करती थी। यश बहुत दुखी हो गया ऐसे समय में उसे कामरेड जगत की याद आयी। वह उनसे मिलने के लिए गया। उसने कहा कि सेठ गरीबों का खून चूसता है आप ही गरीबों को सेठ या उन जैसे लोगों से छुड़ा सकते हो। कामरेड को बातों-बातों में पता चला कि यश बदरी का भाई है। वह कहता है कि दोनों भाइयों में कितना अन्तर है एक सेठ के जुल्म का नाश करने का सपना देख रहा है और दूसरा उनके ही यहाँ नौकरी करके गरीबों को परेशान कर रहा है। कामरेड के यहाँ एक औरत काम करती थी, जिसका नाम रुपमती था। वह कहती है कि बदरी सेठ के यहाँ नौकरी करते है परन्तु वह गरीबों की बहुत मदद करते है। वह गरीबों के देवता हैं। यह सुनकर कामरेड व यश की नजरों में बदरी का सम्मान बढ़ जाता है। घर आने पर राम भइया उसकी पिटाई करते हैं और कहते हैं कि इस तरह आवारा घूमते रहोगे तो काम कौन करेगा वह रोने लगता है तभी वहाँ बदरी भइया आते हैं उनके हाथ में अखबार था।

आज यश के इम्तहान का नतीजा निकला था। यश प्रथम श्रेणी में पास हुआ था। इसी खुशी में बदरी भइया ने सभी को मिठाई खिलाई। राम भइया के आने पर वह उन्हें अपने पास होने की खबर सुनाता है परन्तु वे उसका मजाक उड़ाते हुए कहते हैं कि इससे क्या फर्क पड़ता है तुम्हें तो आखिर खेती ही करनी है। यह सुनकर यश बहुत उदास हो जाता है।

स्कूल खुलने के दिन पास आते जा रहे थे अचानक एक दिन बदरी भइया उसके पास आकर कहते हैं कि तुम्हारे स्कूल कब खुल रहे हैं तुम पढ़ने के लिए बड़हलगंज चले जाओ। उसे विश्वास ही नहीं होता । बदरी भइया

कहते हैं कि तुम्हें आगे पढ़ाने के लिए ही मैंने सेठ के यहाँ नौकरी की। उनकी बातों से पता चलता है कि उन्होंने मल्लाहों की बस्ती में आग नहीं लगाई थी। यश बदरी से कहता है कि भैया आप सचमुच में फरिश्ते हैं।

यश ने बड़हल में एडमिशन ले लिया। बदरी भइया समय पर रुपये और राशन उसके पास पहुँचा देते थे। एक दिन उसे बहुत बुरी खबर मिलती है कि बदरी भइया डूब कर मर गये। राम भइया उससे कहते हैं कि उसी की वजह से बदरी मरा है।

यश की समझ में नहीं आ रहा था कि वह सच्चाई का पता कैसे लगाये। रुपमती बताती है कि बदरी सेठ के पास काम करते हुए भी गरीबों की मदद कर रहे थे। एक बार सेठ के आदमी एक गरीब व्यक्ति को मारने के लिए आए, बदरी ने अपनी लाठी से उस व्यक्ति के सिर पर वार किया जिससे उसके सिर से खून बहने लगा। सेठ ने पुलिस में शिकायत कर दी। पुलिस से बचने के लिए बदरी पानी में कूद गया। पुलिस वाले ने गोली चला दी जिससे बदरी की मौत हो गयी।

उधर काफी समय तक स्कूल ना जाने की वजह से यश का नाम कट गया। यश को अपनी आगे की पढ़ाई की चिन्ता होने लगी। ऐसे समय में उसने राम भइया से कहा कि मुझे मेरी पैतृक संपति में से हिस्सा दे दीजिए। मुझे आगे पढ़ना है। राम भइया हिस्सा देने के लिए तैयार नहीं थे। राम भइया से यश की मार-पीट भी हुई। कामरेड जगत ने भी राम भइया को धमकाया। बाद में यश को उसका हिस्सा मिल गया। यश ने अपना हिस्सा बेचकर उसका पैसा बैंक में जमा करवा दिया और आगे की पढ़ाई करने लगा। धीरे-धीरे उसके सारे पैसे खत्म हो गये। आगे की पढ़ाई के लिए उसने पार्ट-टाइम टीचर की नौकरी कर ली। स्कूल मैनेजर की एक बेटी थी जिसका नाम राधा था। यश राधा को ट्यूशन पढ़ाने लगा। धीरे-धीरे राधा व यश एक-दूसरे को पसंद करने लगे। मैनेजर ट्यूशन के पैसे नहीं देता था। जब यह बात राधा को पता चली तो उसने चुपके से पाँच सौ रुपये लाकर यश को दे दिए। जब यह बात राधा के पिता को पता चली तो उन्होंने यश को आने के लिए मना कर दिया। यश की नौकरी भी छूट गयी। यश का गोरखपुर में रहना मुश्किल हो गया।

सौभाग्य से यश को स्टेट बैंक आफ इंडिया में नौकरी मिल गयी। यश दिल्ली में आकर रहने लगा। वहाँ पद्मिमनी नाम की एक क्लर्क काम करती थी। वह हमेशा यश के पास आने की कोशिश करती रहती थी। यश को यह सब अच्छा नहीं लगता था। यश को लगने लगा कि कहीं इसकी वजह से वह बदनाम न हो जाए। एक दिन वह अपने मित्र से बात कर रहा था कि आजकल की लड़कियाँ बहुत तेज हैं, वह अपना कैरियर बनाने के लिए अफसरों के आगे-पीछे घूमती रहती हैं। पद्मिमनी ने उसकी यह सब बातें सुन ली। उस दिन से उसने यश के पास आना कम कर दिया। यश को जब इस बात का अहसास हुआ तो उसे बहुत दुख हुआ।

अन्त

अपने अतीत की बातें सोचते-सोचते कब यश सो गया उसे पता ही नहीं चला। रात को अचानक उसकी आँख खुली तो देखा कि बारिश हो रही थी । वह दौड़कर सीढ़ियों पर आ गया परन्तु उसके सारे कपड़े गीले हो गये थे। काफी देर तक वह ऐसे ही खड़ा रहा। बारिश बन्द हो जाने पर वह छत पर आ गया। चारपाई भी पानी में भीग गयी थी। यश उसी खाट पर सो गया। सुबह उसे बुखार आ गया। बुखार की हालत में वह उल्टा-सीधा बोलने लगा। अचानक से उसे लगा कि वहाँ पद्मिमनी आ गयी है। वह यश के लिए काफी व फल लेकर आयी थी। यश

उससे बात करना चाहता था , उससे माफी माँगना चाहता था परन्तु पद्ममिनी ने कहाँ कि इस बारे में ज्यादा मत सोचो।

विशेषताएँ

यह उपन्यास वर्तमान में विपत्तियों को झेलकर भविष्य में सफल होने की शक्ति देता है। इस उपन्यास की भाषा सरल, सहज और अर्थपूर्ण है। जहाँ समाज में गरीबों का शोषण करने वाले होते हैं वहीं दलित, शोषित वर्ग को बचाने के लिए कामरेड जगत जैसे लोग भी होते हैं। बाढ़ की घटना ने यश को चुनौतियों का सामना करना और सामना करके जीवन जीना सिखाया। इस उपन्यास में बताया गया है कि यदि प्रकृति व्यक्ति से छिनती है तो उसे देती भी है। यश के अकेलेपन व उदासी को दिखाया गया है परन्तु उसी बीच सुख व दुख के महत्व को भी दर्शाया गया है। बदरी का यश के प्रति प्रेम व गरीबों के प्रति परोपकार को दिखाया गया है।

.....